E-ISSN: 3049-1541
KNOWLEDGE FLAME
INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (KF-IMRJ)
(An International Indexed & Peer Reviewed Journal)
https://knowledgeflame.in PRGI Reg. No. MAHMUL/2024/89852

भक्ति साहित्य में कौशल विकास

प्रा. डॉ. रत्नाकर रावसाहेब हुसे
मत्स्योदरी महाविद्यालय, अंबड, जि. जालना
(MS) Mob : ९०२१५०६५२६

भक्ति शब्द का अर्थ :-

इस शब्द की व्युत्पत्ती 'भज' धातू से हुई है, इसका धार्मिक अर्थ है, सेवा करना या 'भजना' अर्थात श्रद्धा और प्रेमपूर्वक इष्ट देवता के प्रति आसक्ति / व्यावहार में आज हम इस शब्द का अर्थ हम जो कार्य करते है उस कार्य पर उस कौशल पर हमारी असिम भक्ति होना चाहिए। साधा और सरल अर्थ जो भी कार्य मनुष्य को मिला है वह पूर्ण तन, मन, धन के साथ करना। 'महाभारत कार व्यास जी ने भक्ति इस शब्द का अर्थ पूजा में अनुराग माना है। भक्ति संस्कृत भाषा में भक्ति, पाली भाषा में 'भट्टी' भारतीय धर्मो में एक सामान्य शब्द जिसका अर्थ यह लिया जाता हैं। जैसे लगाव, स्नेह, भक्ति, विश्वास, श्रध्दा, पूजा धर्मपरायणता, विश्वास या प्रेम। हमें प्रायः यहा इस शब्द का अर्थ लेना है व्यक्ति ने आत्मसात किया हुआ रोजगार शम कैशल के प्रति उस व्यक्ति का लगाव भक्ति का मूल तत्व एक उच्च उद्देश्य, विश्वास, देवता या कारण के प्रति अटूट और पूरे दिल से समरपन है। जिसमें गहरा प्रेम, निष्ठा और समर्पण आवश्यक है, जो व्यक्तियों को अपने चुने हुए कार्य को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरणा देता है।

साहित्य :

यह शब्द स+हित+य' के योग से बना है। लैटिन भाषा के 'लिटारिटूरा / लिटरेटूरा शब्द से भी साहित्य शब्द की उत्पत्ति हुई है, जिसका मतलब है। 'अक्षरों से बना लेखन' व्यावाहरिक रूप में साहित्य का अर्थ है जो भी चीज आप बनना चाहते हो उसकी सामग्री जैसे आप घर बनना चाहते हो तो उसे रेती, सिमेंट, पत्थर, लोहा, लकडी, आदि साहित्य लगेगा।

भक्ति साहित्य में कौशल विकास :

काव्य साहित्य का समानर्थी शब्द है। साहित्य जीवन और जगत के गत्यात्मक सौदर्य की वह भावमंयी झाँकी है, जिसके सहारे नित्य नवीन आनन्द और कल्याण का विधान होता है। वास्तव में साहित्य भी ज्ञान के सदृश एक अखण्ड सत्ता है, जिसकी अभिव्यक्ति खण्डों में हो पाती है, इन्हीं खण्डों को विविध अभिधान दे दिए गए हैं, जो कभी काव्य तथा कभी शास्त्र के तथा कभी साहित्य के नाम से प्रसिद्धि पाते है।

भक्ति के नौ प्रकार होते है, जिन्हें नवधा भक्ति कहते हैं,

१) श्रवण २) कीर्तन ३) स्मरण ४) पादसेवन ५) अर्चन ६) वंदन ७) दास्य ८) सब्च ९) आत्मनिवेदन

भगवान विष्णू की भक्ति के ये नौ प्रकार प्रल्हाद ने अपने पिता हिरण्यकश्यप को बताए थे। नवधा भक्ति भगवान के प्रति पूर्ण समर्पण का प्रतीक है।

१. श्रवण का मतलब है, भगवान की कथा धौर महत्व को पूरी श्रद्धा से सूनना।
२. कीर्तन का मतलब है, भगवान के गुणों का गुणगाण करना।
३. स्मरण का मतलब है, भगवान का सदैव स्मरण करना।
४. पावसेवन का मतलब है, सदैव भगवान के चरणों में अपना सर्वस्व अर्पण कर देना।
५. वंदन का मतलब है, पवित्र साम्रगी से भगवान की पूजा करना।
६. दास्य का मतलब है, भगवान को स्वामी और अपने को उनका दास समझना।
७. सख्य का मतलब है, भगवान को अपना परम मित्र समझना।
८. आत्मनिवेदन का मतलब है. अपनी स्वतंत्रता लाग कर अपने आपको पूरी तरह भगवान को समर्पित कर देना।
९. आर्त, जिज्ञासू, अर्थार्थी और ज्ञानी, थे चार प्रकार के भक्त मेरी शक्ति करते हैं। इनमें से सबसे निम्म श्रेणी का भक्त आर्थाथी है, उससे श्रेष्ठ आर्त, आर्त से श्रेष्ठ जिज्ञासू और जिज्ञासू से भी श्रेष्ठ ज्ञानी है।
१०. भक्ति, भारतीय आध्यात्मिक परंपरा का एक अहम हिस्सा है।
११. भक्ति का मकसद आत्मा को परमात्मा से जोड़ना और सांसरिक बंधनों से मुक्त कराना है।
१२. भक्ति को प्रेम, श्रद्धा और समर्पण के जरिए ईश्वर से जुड़ने का रास्ता माना जाता है।
१३. विभिन्न धार्मिक ग्रंथों में भक्ति के अलग-अलग प्रकारों का जिक्र मिलता है।

भक्ति साहित्य में कौशल विकास :

हिंदी साहित्य में भक्तिकाल आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने संवत् 1375 वि. से संवत् 1700 वि. तक के समय को भक्तिकाल माना है। इनके अनुसार इस समय में लिखा गया काव्य जो है, उसमें 'भक्ति' भाव की प्रधानता है।

भक्ति काव्य का वर्गीकरण :

सामान्यतः उस काल को दो भागों में विभक्त किया गया है- निर्गुन धारा एवं सगुण धारा। इसे और दो धाराओं में विभक्त किया गया है। १) ज्ञानाश्रयी शाखा और प्रेमाश्रयी शाखा तथा सगुण धारा को रामकाव्य और कृष्णकाव्य में विभक्त किया गया है।

E-ISSN: 3049-1541
KNOWLEDGE FLAME
INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (KF-IMRJ)
(An International Indexed & Peer Reviewed Journal)
https://knowledgeflame.in PRGI Reg. No. MAHMUL/2024/89852

ज्ञानाश्रयी शाखा के कवियों को सन्त कवि कहा जाता है और इस शाखा के प्रतिनिधि कवि है- कबीर। प्रेममार्गी शाखा तथा सूफी शाखा के नाम से भी इसे जाना जाता है। इस काल धारा के प्रतिनिधि कवि हैं- जायसी। इस प्रकार रामकाव्य परम्परा के प्रतिनिधि कवि हैं- तुलसी और कृष्णकाव्य परम्परा के प्रतिनिधि कवि हैं- सूरदास

कौशल विकास :

कौशल शब्द का अर्थ है, किसी काम को कुशलता से करना या किसी काम को ठीक तरीके से करना। कौशल एक सीखी हुई क्षमता है। यह किसी निश्चित समय या ऊर्जा के अंदर अच्छे नतीजे के साथ काम करने की क्षमता है। कौशल को सामान्य और विशिष्ट कौशल में बांटा जा सकता है। अर्थात मनुष्य किसी कार्य करने में चतुर, कुशल, कल्याण, धन, खुशी, निपुणता, चतुराई, पटुता, नैपुण्य, दक्षता हासील करना वह सारे गुण कौशल आत्मसात करना।

निसर्गत: प्रत्येक मनुष्य अपनी बुद्धी, शारिरिक क्षमता, सामाजिक परिस्थिती अलग-अलग होती है। इस कारण प्रत्येक मनुष्य की अपनी अलग-अलग विचार, मत प्रवाह होते है। उस कारण ही प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में अलग-अलग क्षेत्र में अपना करियर करता है। अपने कौशल का विकास करता है।

साहित्य निर्माण (कौशल) के कारण :

भारतीय काव्यशास्त्र में काव्य (साहित्य) के 'हेतु' शब्द का अर्थ कारण कहा है। अतः 'काव्य हेतु' का अर्थ हुआ कावा की उत्पत्ति का कारण कौशल विकास किसी व्यक्ति में काव्य रचना की सामर्थ्य उत्पन्न कर देनेवाले कारण काव्य हेतु कहलाते है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि काव्य 'कार्य कौशल' है और 'हेतु' कारण है। बाबू गुलाबराय ने काव्य हेतु पर विचार करते हुए लिखा है- "हेतु का अभिप्राय उन साधनों से है, जो कवि की काव्य रचना में सहायक होते हैं।"

साहित्य (काव्य) के निर्माण कारण को साहित्य हेतु कहा जाता है। साहित्य रचना कर सकने की शक्ति सामर्थ हर व्यक्ति में नही होती। जो व्यक्ति अपनी अनुभूतियों को सुन्दर, विलक्षण, व्यंजनात्मक रूप में अभिव्यक्त कर लेते हैं वे ही साहित्यकार या कवि कहलाते है क्योंकि उनकी अभिव्यक्ति साधारण जन से भिन्न होती है।

भारतीय साहित्यशास्त्र में काव्य हेतुओं पर पर्याप्त विचार किया गया है और तीन काव्य हेतु माने गए है-

१) प्रतिभा २) व्युत्पत्ती ३) अभ्यास

E-ISSN: 3049-1541
KNOWLEDGE FLAME
INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (KF-IMRJ)
(An International Indexed & Peer Reviewed Journal)
https://knowledgeflame.in PRGI Reg. No. MAHMUL/2024/89852

उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि प्रतिभा व्युत्पत्ति और अभ्यास ही प्रमुख काय कौशल है, लेकिन प्रतिभा सर्व प्रमुख है। अत: ये तीनों समन्वित रूप में ही साहित्य के कौशल है जिन्हें अलग-अलग नहीं किया जा सकता।

संदर्भ :

१) भारतीय काव्यशास्त्र, बाबु गुलाबराय, पृ. २५८।

२) चिंतामणी निबंध, रामचंद्र शुक्ल, पृ.१४५।

३) जैनेंद्र कुमार, साहित्य का श्रेय और प्रेय, पृ.७५।

४) गोपाल कृष्ण अग्रवाल, भारतीय सामाजिक संस्थाएँ, पृ.३५।